ASTRO ARPITA NATH

कुंडली में मांगलिक दोष - अर्थ, प्रभाव, निवारण और उपाय

Arpita Nath द्वारा · मध्यवर्ती ज्योतिष नोट्स · 2026-09-09

वैदिक ज्योतिष में मंगल या मांगलिक दोष (जिसे भौम दोष, कुज दोष या अंगारक दोष के नाम से भी जाना जाता है) तब बनता है, जब आक्रामक ग्रह मंगल (Mangal) जन्म कुंडली के विशिष्ट भावों में स्थित होता है, जिससे संभावित रूप से रिश्तों और पारिवारिक शांति में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

मंगल दोष क्या है?

मंगल ऊर्जा, पराक्रम, जुनून और संघर्ष का प्रतीक है। जब मंगल व्यक्तिगत पहचान, घरेलू सौहार्द या वैवाहिक संबंधों से जुड़े भावों में बैठता है, तो इसका तीव्र और उग्र स्वभाव गलतफहमियों, भावनात्मक अस्थिरता या विवाह में देरी का कारण बन सकता है।

इन स्थितियों में मंगल वाले व्यक्ति को मांगलिक कहा जाता है।

किन स्थितियों से मंगल दोष बनता है?

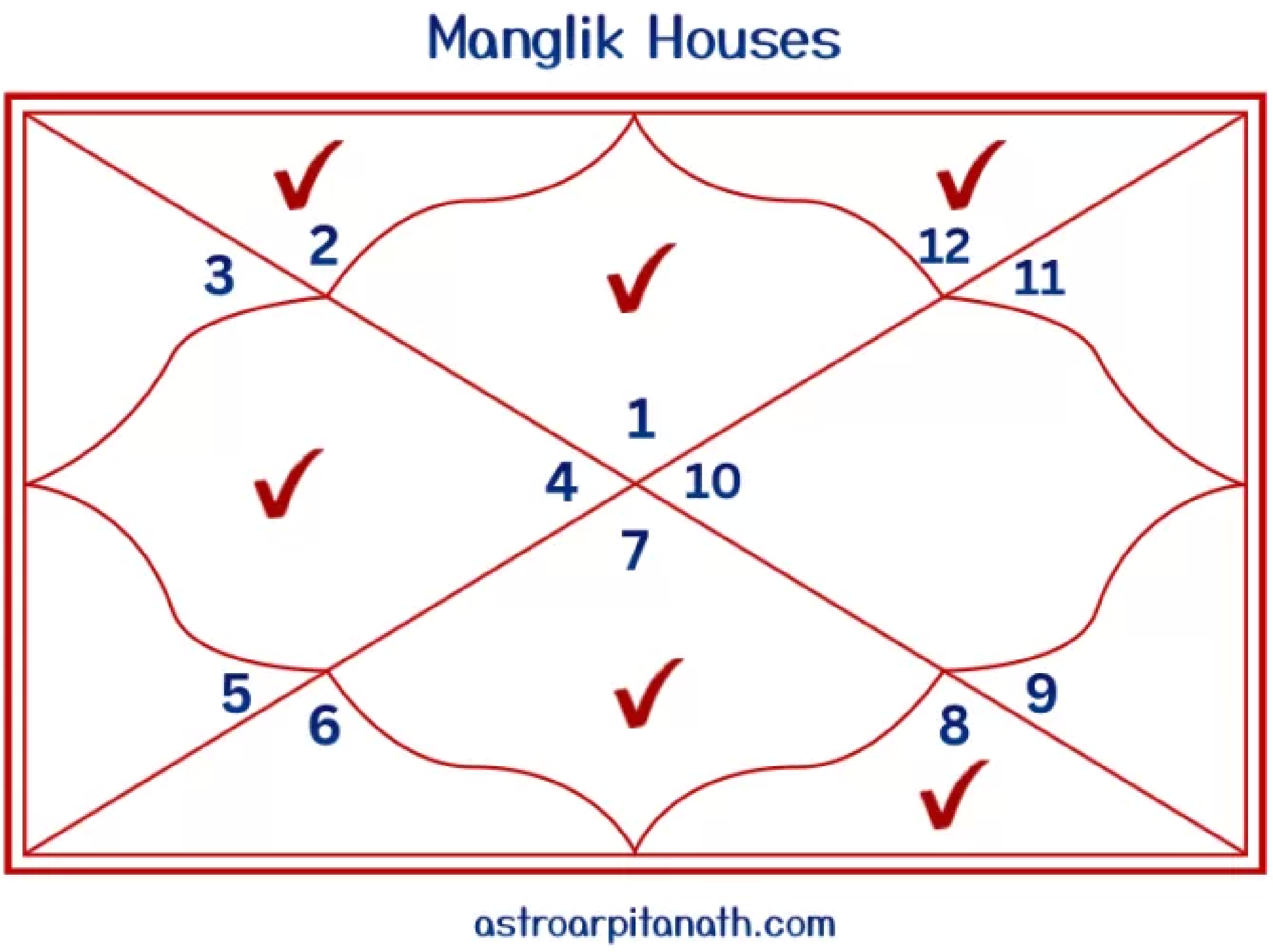

मंगल दोष तब बनता है जब मंगल लग्न (Lagna), चंद्रमा या शुक्र से **1ले, 4थे, 7वें, 8वें या 12वें** भाव में स्थिति होता है। (कुछ परंपराओं में द्वितीय भाव को भी शामिल किया जाता है)।

- **प्रथम भाव (Lagna):** व्यक्तिगत संबंधों में प्रत्यक्ष आक्रामकता, अत्यधिक क्रोध और अहं का टकराव।
- **द्वितीय भाव:** पारिवारिक संबंधों में तनाव, कटु वाणी और आर्थिक परेशानियां।
- **चतुर्थ भाव:** पारिवारिक शांति की कमी, घर के वातावरण में अस्थिरता और संपत्ति से जुड़े विवाद।
- **सप्तम भाव:** वैवाहिक जीवन पर सीधा प्रभाव, वैवाहिक कलह या तलाक की अत्यधिक संभावना।
- **अष्टम भाव:** भावनात्मक उथल-पुथल, छिपे हुए विवाद और जीवनसाथी के लिए स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां।
- **द्वादश भाव:** अनावश्यक आर्थिक व्यय, अंतरंग संबंधों में गलतफहमियां और मानसिक तनाव।

मंगल दोष के मुख्य प्रभाव

- **विवाह में देरी:** उपयुक्त जीवनसाथी खोजने में कठिनाई या विवाह में अनपेक्षित विलंब।
- **वैवाहिक तनाव:** बार-बार वाद-विवाद, वर्चस्व की होड़ या आपसी समझ का अभाव।
- **भावनात्मक उथल-पुथल:** बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया देना, ईर्ष्या या क्रोध में उग्र हो जाना।
- **स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति संबंधी चिंताएं:** अत्यधिक थकावट या स्वयं अथवा जीवनसाथी के लिए स्वास्थ्य संबंधी बाधाएं (यदि दोष का शमन न हुआ हो)।

दोष निवारण और अपवाद (दोष भंग)

इन भावों में मंगल की हर स्थिति सिक्रिय मंगल दोष नहीं बनाती है। वैदिक ज्योतिष ऐसे कई नियम प्रदान करता है जहाँ इसका नकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाता है:

- **कुंडलियों का मिलान:** यदि दोनों साथी मांगलिक हों, तो यह दोष परस्पर समाप्त हो जाता है (दोष साम्यम्)।
- **शुभ दृष्टि:** यदि बृहस्पति (Guru) या शुक्र की दृष्टि मंगल पर पड़ रही हो, तो इसकी उग्रता काफी हद तक शांत हो जाती है।

• **स्वराशि या उच्च राशि:** यदि मंगल अपनी स्वराशि (मेष, वृश्चिक) या अपनी उच्च राशि (मकर) में स्थिति हो, तो यह दोष अपना अशुभ प्रभाव खो देता है।

• **मित्र राशियां:** सिंह या धनु राशि में मंगल अक्सर नकारात्मक प्रभाव को कम कर देता है।

• **आयु का प्रभाव:** जैसे-जैसे मंगल परिपक्व होता है (आमतौर पर 28–30 वर्ष की आयु के आसपास), मंगल दोष की तीव्रता स्वतः ही कम हो जाती है।

• **विशिष्ट लग्न:** कर्क और सिंह लग्न के जातकों के लिए मंगल एक अत्यंत शुभ ग्रह (योगकारक) बन जाता है, जिससे दोष का प्रभाव लगभग समाप्त हो जाता है।

पारंपरिक उपाय

• **Kundali मिलान:** ऊर्जा के स्तर को संतुलित करने के लिए दो मांगलिक व्यक्तियों का विवाह कराना।

• **कुंभ विवाह:** वास्तविक विवाह से पूर्व किसी वृक्ष, मिट्टी के घड़े या चांदी की मूर्ति के साथ पारंपरिक प्रतीकात्मक विवाह समारोह।

• **आध्यात्मिक उपाय:** मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करना, मंगलवार का व्रत रखना या मंगल जप करना।

• **दान:** मंगलवार के दिन लाल मसूर की दाल, तांबे की वस्तुएं या लाल वस्त्रों का दान करना।

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।